भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 08-09-2026

बिहार में एल-नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

सितम्बर माह के बीते 1 सप्ताह में राज्य में 68.2 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो कि सामान्य (53.0 मिमी) से लगभग 29% अधिक है। पहले सप्ताह में हुई इस अतिरिक्त वर्षा से सूखे से जूझ रहे जिलों में, विशेषकर दक्षिण बिहार के लगभग 14 जिले जहाँ 60% और उससे ज़्यादा वर्षा हुई है, किसानों को कुछ राहत मिली है। हालाँकि, राज्य में -35% की कमी (जून से लेकर अब तक) के साथ मानसून की स्थिति अब भी कई जिलों में चिंताजनक बनी हुई है। बक्सर, गया, औरंगाबाद, सीवान, लखीसराय और खगड़िया को छोड़ कर, राज्य के सभी 32 जिलों में वर्षा की कमी देखी गई है, विशेष रूप से शिवहर (**-61**%) में। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) पटना केंद्र के अनुसार, आने वाले 5 दिनों में राज्य के अधिकतम और न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। दिनाँक 9-10 सितम्बर में, उत्तर पश्चिमी बिहार और दक्षिणी बिहार के जिलों में अनेक स्थानों पर मेघ-गर्जन/वज्रपात, तेज हवा के साथ मध्यम से भारी स्तर तक की वर्षा की संभावना है। इस स्थिति में, खरीफ की फसलों और पशुधन को संभावित नुकसान से बचाने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- संभावित वर्षा के जल संचय हेतु, वर्षा जल प्रबंधन तकनीकियों जैसे- छतों पर वर्षा जल संचयन, तालाब, परकोलेशन टैंक, कंटूर बंडिंग एवं ग्रेडेड बंड, चेक डैम, गली प्लगिंग, रिचार्ज पिट, रिचार्ज कुएँ, रेज्ड और सनकेन बेड प्रणाली को अपनाएं। वर्षा संकट के समय सूखे जैसी स्थितियों से निपटने के लिए, यह संचयित जल वरदान साबित हो सकता है।
- संभावित वर्षा का लाभ लेने के लिए, खेतों की मेड़ों की मरम्मत करें ताकि खेतों में ही वर्षा जल का संचय किया जा सके। खेत की जल धारण क्षमता बढ़ाने के लिए मेड़ों की ऊँचाई (30-35 सेमी तक) बढ़ा दें।
- यथासंभव खेत के एक छोटे से हिस्से में गड्ढानुमा आकार अवश्य बनाएं। वर्षा संकट के समय इसमें संचित जल को सिंचाई के लिए उपयोग किया जा सकता है।
- अत्यधिक वर्षा की स्थिति में, जिन निचले क्षेत्रों में जलजमाव की संभावना हो, वहां मक्का, अरहर और सब्जियों (जैसे मिर्च, टमाटर, बैंगन) की फसल में अतिरिक्त पानी निकलने के लिए निकास नालियां अवश्य तैयार करें अन्यथा पौधों में जड़-गलन की समस्या हो सकती है।
- धान के खेतों में रोपाई के 50-55 दिनों पर एक निकौनी करें और जहाँ संभव हो, कोनो-वीडर का यथासंभव प्रयोग करें।
- धान के खेतों में, वृद्धि के महत्वपूर्ण चरण- कल्ले फूटने की सक्रिय अवस्था एक सिंचाई अवश्य करें और इस अवस्था पर 25% अतिरिक्त नाइट्रोजन का उपरिवेशन करें।

- पोषक तत्वों के नुकसान को कम करने के लिए नीम-कोटेड यूरिया/ सल्फर कोटेड यूरिया का इस्तेमाल करें। बारिश/ मौसम साफ होने के बाद ही हल्की नमी में फसल को पोषक तत्व दें/ टॉप-ड्रेसिंग करें।
- संभावित स्थितियों में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें और आवश्यकता पड़ने पर गंभीर स्थितियों में ही अनुमोदित दवा की अनुशंसित मात्रा का प्रयोग करें।
- कीट प्रबंधन के लिए खेतों में फेरोमोन और स्टिकी ट्रैप लगाएं।
- पशुओं के लिए हर समय स्वच्छ एवं पर्याप्त मात्रा में पेयजल की उपलब्धता बनाए रखें।
- उपलब्ध अतिरिक्त हरे चारे को साइलेज और हे (सूखा चारा) के रूप में संरक्षित करें।
- मवेशियों का खुरपका-मुहपका, गला घोंटू और लंगड़ी के लिए टीकाकरण अवश्य करें। बकरियों को पीपीआर का टीका लगवाएं।
- पशुओं को पेट के कीड़ों के लिए दवा दें। पशुओं को हरा चारा काटकर तुरंत न दें, इसे रात भर जमीन में फैलाकर सुखाने के बाद ही दें। पशुओं को फफूंदी वाला भूसा न खिलाएं।